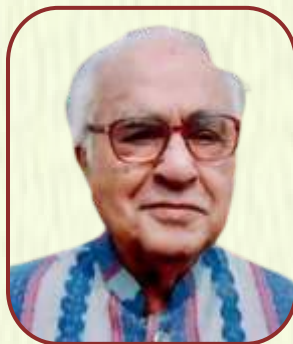


Padma Shri



DR. RAJAT KUMAR KAR

Dr. Rajat Kumar Kar is an economist, educational planner and administrator, retired as Director Teacher Education and SCERT Govt. of Odisha. He is widely recognized around the world as the oldest and longest living commentator of the Car Festival (Ratha Yatra) of Lord Jagannath in both radio/television media since 1958. He is also a pioneer in reviving the dying art of 'Pala' and popularizing it throughout Odisha.

2. Born on 2nd October, 1934 at Cuttack, Dr. Kar did his initial schooling from Ravenshaw Collegiate School and his Master's in economics from Utkal University in 1953. Later on, after a period of lectureship in Bhadrak and Jeypore, he moved in as an administrator in the education department with a distinguished career of over three decades. During his service in the department at various positions, he achieved many milestones- like becoming the First Joint Director of Non-formal Education. Under his stewardship, Odisha got first prize for implementation of non-formal education in Odisha. The State was also awarded another first prize for implementation of Adult Education under his leadership as Director Elementary and Adult Education.

3. Dr. Kar has taken up the mission of popularizing Kavi Samrat Upendra Bhanja and other ancient literature of Odisha. Since 1944, he has been associated with movement for Odisha's cultural renaissance entitled "Bhanja Jayanti". He strived hard for propagation of Odisha's traditional culture including delineation of specialty in Upendra Bhanja and other mediaeval poets. He also made efforts for preservation of Odissi music and dance from 1950. He led this movement from 1960 as President of Kalinga Bharati. He has highlighted the special features of Upendra Bhanja's writings and illustrated the high philosophy of life in his literature worldwide for over a period of six decades.

4. Dr. Kar has to his credit a number of popular articles and research papers based on his research throughout his life, published in various magazines and newspapers worldwide. He provided guidance in reshaping and reviving performance of Pala and worked in popularizing it by conducting various talent hunt competitions throughout Odisha. This effort has been crowned with success by a popular television series entitled 'Badi-Pala' and has brought a new energy in the lives of the 'Pala' performers. Since, 1951, he is the oldest surviving active 'A-grade' Actor and Drama-Artist of AIR, Cuttack.

5. Dr. Kar is a recipient of many regional, national and international awards including Odisha Sahitya Akademy's "Life Time Achievement Award" in 2018; Honorary D.Lit. by Utkal University of Culture in 2017; Eminent Orator Award from Orissa Society of Americans, United States of America Jagannath Society of America Award from JSA America, Chicago in 2000 and many more such awards. He is a playwright of five popular plays for radio and television besides several one-act plays for which he has been conferred the 'Best-playwright' award by Odisha Sangeet Natak Akademy in the year 1995.



डॉ. रजत कुमार कर

डॉ. रजत कुमार कर एक अर्थशास्त्री, शिक्षा योजनाकार और प्रशासक हैं, जो निदेशक, शिक्षक शिक्षा और एससीईआरटी, ओडिशा सरकार के रूप में सेवानिवृत्त हुए हैं। वह 1958 के बाद से विश्व भर में रेडियो/टेलीविजन दोनों में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा महोत्सव के सबसे पुराने और सबसे लंबे समय तक रहने वाले कमेंटेटर के तौर पर भी जाने जाते हैं। वह लुप्तप्राय: 'पाला' कला को पुनर्जीवित करने और इसे पूरे ओडिशा में लोकप्रिय बनाने में भी अग्रणी रहे हैं।

2. कटक में 2 अक्टूबर, 1934 को जन्मे, डॉ. कर ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा रेवेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल से प्राप्त की और 1953 में उत्कल विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि अर्जित की। बाद में, भद्रक और जीपोर में लेक्चरर के रूप में कार्य करने के बाद बतौर प्रशासक शिक्षा विभाग में चले गए जहाँ उन्होंने तीन दशक से अधिक समय तक कार्य किया। शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए, उन्होंने गैर-औपचारिक शिक्षा के पहले संयुक्त निदेशक बनने जैसी कई उपलब्धियां हासिल की। उनकी अगुवाई में ओडिशा में गैर-औपचारिक शिक्षा को लागू करने के लिए ओडिशा को प्रथम पुरस्कार मिला। प्रारंभिक और प्रौढ़ शिक्षा निदेशक के रूप में, उनके नेतृत्व में प्रौढ़ शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए राज्य को एक और प्रथम पुरस्कार भी प्रदान किया गया था।

3. डॉ. कर ने कवि सम्राट् उपेंद्र भांजा और ओडिशा के अन्य प्राचीन साहित्य को लोकप्रिय बनाने का अभियान शुरू किया है। 1944 से वह "भांजा जयंती" नामक ओडिशा के सांस्कृतिक पुनर्जागरण आंदोलन से जुड़े रहे हैं। उन्होंने उपेंद्र भांजा और अन्य मध्यकालीन कवियों की विशेषता के निरूपण सहित ओडिशा की पारंपरिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए अथक प्रयास किया। उन्होंने 1950 से ओडिसी संगीत और नृत्य के संरक्षण के लिए भी प्रयास किए। उन्होंने कलिंग भारती के अध्यक्ष के रूप में, 1960 से इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। उन्होंने उपेंद्र भांजा के लेखन की विशिष्ट खूबियों पर प्रकाश डाला है और छह दशक से ज्यादा अवधि के दौरान, दुनिया भर में उनके साहित्य में निहित जीवन के उच्च दर्शन को चित्रित किया है।

4. डॉ. कर को आजीवन शोध के आधार पर दुनिया की विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में कई लोकप्रिय लेख और शोध पत्र को प्रकाशित करने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने 'पाला' के प्रदर्शन को नया रूप देने और उसे पुनर्जीवित करने में मार्गदर्शन प्रदान किया और पूरे ओडिशा में विभिन्न प्रतिभा खोज प्रतियोगिताओं का आयोजन करके इसे लोकप्रिय बनाने का कार्य किया। उनके इस प्रयास को 'बड़ी-पाला' नामक एक लोकप्रिय टेलीविजन श्रृंखला द्वारा सफल बनाया गया है और इससे 'पाला' कलाकारों के जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। 1951 के बाद से, वह आकाशवाणी, कटक के सबसे पुराने सक्रिय "ए ग्रेड" अभिनेता और नाट्य कलाकार हैं।

5. डॉ. कर को कई क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें 2018 में ओडिशा साहित्य अकादमी का "लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड"; 2017 में उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा मानद डी.लिट; ओडिशा सोसायटी ऑफ अमेरिकन्स का प्रख्यात वक्ता पुरस्कार, 2000 में जेएसए अमेरिका, शिकागो की ओर से संयुक्त राज्य अमेरिका जगन्नाथ सोसायटी ऑफ अमेरिका पुरस्कार आदि शामिल हैं। वह रेडियो और टेलीविजन के लिए पांच लोकप्रिय नाटकों और कई एकांकी नाटकों के लेखक हैं और उनके लिए उन्हें वर्ष 1995 में ओडिशा संगीत नाटक अकादमी द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ नाट्य लेखक' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।